चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	9-11-25	2	1-5

खेती

सरसों में जड़ गलन समस्या की पहचान कर छिड़काव करें किसान : प्रो. कांबोज

सरसों में जड़ गलन, फुलिया व उखेड़ा के लक्षण दिखाई दिए

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। प्रदेश के कुछ जिलों में सरसों की फसल में जड़ गलन, फुलिया और उखेड़ा जैसी बीमारियों के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) ने किसानों को इस अवस्था में कीटनाशकों का प्रयोग न करने की सलाह दी है। किसानों को कार्बेन्डाजिम 50% डब्ल्यूपी 1 ग्राम और स्टेप्टोसाइक्लीन 0.3 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करने की सिफारिश की गई है।

एचएयू कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि सरसों हरियाणा की एक प्रमुख फसल है, जो राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ मानी जाती है। वर्ष 2024-25 में यह फसल लगभग 6.68 लाख हेक्टेयर में उगाई गई थी और किसानों को अच्छा उत्पादन मिला था। इस साल क्षेत्रफल बढ़कर 7 लाख हेक्टेयर तक पहुंचने की संभावना है। हालांकि, अत्यधिक वर्षा और ऊंची नमी के कारण बुवाई समय पर नहीं हो सकी और किसानों को कम तैयार भूमि में फसल बोनी पड़ी, जिससे रोगों की संभावना बढ़ गई।

सरसों की फसल का जायजा लेते एचएयू के डॉ. राजबीर गर्ग एवं अन्य। स्रोत संस्थान

कुलपति ने कहा कि जिन किसानों ने बीज उपचार नहीं किया, उनके खेतों में जड़ गलन, फुलिया और उखेड़ा की समस्या ज्यादा देखने को मिल रही है। उन्होंने बताया कि इस समय तापमान कम होने के कारण चितकबरा कीट (पेंटेड बग) का खतरा नहीं है, लेकिन किसान पुराने अनुभव के आधार पर कीटनाशक छिड़काव कर रहे हैं, जिससे नुकसान हो सकता है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि जड़ गलन रोग मुख्यतः फ्यूजेरियम, राइजोक्टोनिया और स्क्लेरोटियम फफूंद के कारण होता है। इसमें पौधे बीजपत्ती अवस्था में सूखने लगते हैं और जड़ों पर सफेद फफूंद दिखाई देती है। इस स्थिति में कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत घोल छिड़कना चाहिए और जरूरत पड़ने पर 15 दिन बाद पुनः छिड़काव करें। फुलिया रोग की स्थिति में पत्तियों के नीचे सफेद फफूंद उभरती है, जिससे पत्तियां पीली होकर सूखने लगती हैं। ऐसे में मैंकोजेब (डाइथेन एम-45) या मेटलैक्सिल+मैन्कोजेब का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी घोलकर छिड़काव करने की सलाह दी गई है।

तिलहन अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार ने कहा कि लंबे समय तक खेतों में पानी भरा रहने से पौधे मुरझा जाते हैं। किसानों को हल्की सिंचाई करनी चाहिए और जहां नमी अधिक हो वहां पहली सिंचाई 10 दिन देरी से करें।

पादप रोग विशेषज्ञ डॉ. राकेश पूनिया ने कहा कि जिन खेतों में पौधों की पत्तियां मुरझा रही हैं, वहां कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम और स्टेप्टोसाइक्लीन 0.3 ग्राम प्रति लीटर पानी का छिड़काव करें। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के फार्म निदेशक डॉ. सुरेंद्र सिंह धनखड़, डॉ. सुरेंद्र यादव, डॉ. संदीप आर्य, डॉ. नीरज कुमार और अन्य वैज्ञानिक मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	9-11-25	4	5-6

सरसों की फसल में आ रही जड़ गलन फुलिया और उखेड़ा जैसी समस्याएं

भास्कर न्यूज | हिसार

सरसों की फसल किसानों की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है। हकृवि कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया इस वर्ष अधिक बारिश के कारण फसल की बुवाई उच्च आर्द्रता और कम तैयार भूमि में हुई है। यह स्थिति इस फसल की प्रकृति के विपरीत है लेकिन किसानों के पास देरी से बुवाई से बचने का कोई विकल्प नहीं था। इन विशिष्ट सूक्ष्म जलवायु परिस्थितियों में जड़ गलन, फुलिया व उखेड़ा जैसी कुछ क्षेत्रीय समस्याएं उत्पन्न हुई हैं।

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि जो किसान बीज उपचार नहीं कर पाए थे उनके खेतों में सरसों की फसल में जड़ गलन, फुलिया व पहली सिचाई के बाद उखेड़ा जैसी समस्यां उत्पन्न हुई हैं। इस वर्ष कम तापमान के कारण पेंटेड बग चितकबरा कीट की कोई विशेष समस्या नहीं है। फिर भी, किसान अभी भी अपनी पुरानी पद्धति के अनुसार कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे हैं। इसलिए, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे इस अवस्था में कीटनाशकों का प्रयोग ना करें।

कार्बेन्डाजिम का करें छिड़काव : डॉ. राजबीर

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने भी फार्म का जायजा लिया और बताया कि जड़ों का गलना दो से तीन फफूंद के सामान्य समावेश फ्यूजेरियम, राइजोक्टोनिया और स्क्लेरोटियम के कारण होता है। जिसमे बिजाई के 10-15 दिन में बीजपती अवस्था पर पौधे सूख या मुरझा जाते हैं और जड़ वाले हिस्से में सफेद रंग की फफूंद दिखाई देती हैं। उस अवस्था में कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत घोल बना कर छिड़काव करें। यदि आवश्यक हो, तो 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव दोहराएं। दूसरा, पत्ती के नीचे वाली सतह पर ऐसी सफेद रंग की फफूंद आ जाती है, जिससे बाद में पत्तियां पीली होकर सूखने लगती हैं, ये सरसों में फुलिया रोग के लक्षण है। अगर ऐसे पौधे ज्यादा हैं तो मैंकोजेब डाइथेन एम-45 या मेटलैक्सिल 4 प्रतिशत+मैन्कोजेब 64 प्रतिशत नामक दवाई का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव कर दें। उन्होंने बताया यदि जड़ गलन और पत्तियों पर धब्बे एक साथ दिखाई दें तो कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत और मैन्कोजेब 0.25 प्रतिशत की दर से टैंक मिश्रण के रूप में डालें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	9-11.25	9	7-8

हिसार। सरसों की फसल का जायजा लेते अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग।

किसान सरसों में जड़ गलन समस्या की पहचान करके करें छिड़काव

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

सरसों हरियाणा की एक महत्वपूर्ण फसल है और किसानों की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है। रबी 2024-25 में इसे 6.68 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया गया और किसानों ने अच्छा उत्पादन लिया था। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि इस वर्ष अत्यधिक वर्षा के कारण, इस फसल की बुवाई उच्च आर्द्रता और कम तैयार भूमि में हुई है। यह स्थिति इस फसल की प्रकृति के विपरीत है, लेकिन किसानों के पास देरी से बुवाई से बचने का कोई विकल्प नहीं था। इन विशिष्ट सूक्ष्म जलवायु परिस्थितियों में जड़ गलन, फुलिया व उखेड़ा जैसी कुछ क्षेत्रीय समस्याएं उत्पन्न हुई हैं।

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि जो किसान बीज उपचार नहीं कर पाए थे उनके खेतों में सरसों की फसल में जड़ गलन, फुलिया व पहली सिचाईं के बाद उखेड़ा जैसी समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। उन्होंनें इन समस्यों से बचने के लिए बताया कि इस वर्ष कम तापमान के कारण पेंटेड बग (चितकबरा कीट) की कोई विशेष समस्या नहीं है। फिर भी, किसान अभी भी अपनी पुरानी पद्धति के अनुसार कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे हैं। इसलिए, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे इस अवस्था में कीटनाशकों का प्रयोग न करें। दूसरा, पत्ती के नीचे वाली सतह पर ऐसी सफ़ेद रंग की फफूंद आ जाती है, जिससे बाद में पत्तियां पीली होकर सूखने लगती हैं, ये सरसों में फुलिया रोग के लक्षण है। अगर ऐसे पौधे ज्यादा हैं तो मैंकोजेब या मेटलैक्सिल 64 प्रतिशत नामक दवाई का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिडक़ाव कर दें। उन्होंने बताया कि यदि जड़ गलन और पत्तियों पर धब्बे एक साथ दिखाई दें, तो कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत और मैन्कोजेब 0.25 प्रतिशत की दर से टैंक मिश्रण के रूप में डालें।

अनुसंधान निदेशक ने लिया फार्म का जायजा

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने भी फार्म का जायजा लिया और बताया कि जड़ों का गलना दो से तीन फफूंद के सामान्य समावेश (फ्यूजेरियम, राइजोक्टोनिया और स्क्लेरोटियम) के कारण होता है जिसमे बिजाई के 10-15 दिन में बीजपती अवस्था पर पौधे सूख या मुरझा जाते है तथा जड़ वाले हिस्से में सफेद रंग की फफूंद दिखाई देती हैं। उस अवस्था में कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत घोल बना कर छिडकाव करें। यदि आवश्यक हो, तो 15 दिनों

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	9-11-25	5	1-2

सरसों के जड़ गलन रोग की समय पर करें रोकथाम

जागरण संवाददाता • हिसार : सरसों हरियाणा की एक महत्वपूर्ण फसल है और किसानों की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है। रबी 2024-25 में इसे 6.68 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया गया और किसानों ने अच्छा उत्पादन लिया था। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि इस वर्ष अत्यधिक वर्षा के कारण, इस फसल की बुवाई उच्च आर्द्रता और कम तैयार भूमि में हुई है। यह स्थिति इस फसल की प्रकृति के विपरीत है, लेकिन किसानों के पास देरी से बुवाई से बचने का कोई विकल्प नहीं था। इन विशिष्ट सूक्ष्म जलवायु परिस्थितियों में जड़ गलन, फुलिया व उखेड़ा जैसी कुछ क्षेत्रीय समस्याएं उत्पन्न हुई हैं । कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि जो किसान बीज उपचार नहीं कर पाए थे उनके खेतों में सरसों की फसल में जड़ गलन, फुलिया व पहली सिंचाई के बाद उखेड़ा जैसी समस्यां उत्पन्न हुई हैं। उन्होंने बताया कि इस वर्ष कम तापमान के कारण पेंटेड बग (चितकबरा कीट) की कोई विशेष समस्या नहीं है। फिर भी, किसान अभी भी अपनी पुरानी पद्धति के अनुसार कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे हैं। इसलिए, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे इस अवस्था में कीटनाशकों का प्रयोग ना करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	9-11-25	3	2-5

सरसों की फसल में आई जड़ गलन सहित कई समस्याएं, किसानों को कृषि वैज्ञानिकों को बताए उपाये

सरसों में जड़ गलन समस्या की पहचान कर छिड़काव करें किसान: प्रो.काम्बोज

सरसों की फसल का जायजा लेते अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग एवं अन्य

हिसार, 8 नवम्बर (ब्यूरो): सरसों हरियाणा की एक महत्वपूर्ण फसल है और किसानों की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है। रबी 2024-25 में इसे 6.68 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया गया और किसानों ने अच्छा उत्पादन लिया था। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि इस वर्ष अत्यधिक वर्षा के कारण, इस फसल की बुवाई उच्च आर्द्रता और कम तैयार भूमि में हुई है। यह स्थिति इस फसल की प्रकृति के विपरीत है, लेकिन किसानों के पास देरी से बुवाई से बचने का कोई विकल्प नहीं था।

इन विशिष्ट सूक्ष्म जलवायु परिस्थितियों में जड़ गलन, फुलिया व उखेड़ा जैसी कुछ क्षेत्रीय समस्याएं उत्पन्न हुई हैं ।

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि जो किसान बीज उपचार नहीं कर पाए थे उनके खेतों में सरसों की फसल में जड़ गलन, फुलिया व पहली सिचाई के बाद उखेड़ा जैसी समस्यां उत्पन्न हुई हैं।

उन्होंने इन समस्यों से बचने के लिए बताया कि इस वर्ष कम तापमान के कारण पेंटेड बग (चितकबरा कीट) की कोई विशेष समस्या नहीं है। फिर भी, किसान अभी भी अपनी पुरानी पद्धति के अनुसार कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे हैं। इसलिए, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे इस अवस्था में कीटनाशकों का प्रयोग ना करें। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने भी फार्म का जायजा लिया और बताया कि जड़ों का गलना दो से तीन फफूंद के सामान्य समावेश (फ्यूजेरियम, राइजोक्टोनिया और स्क्लेरोटियम) के कारण होता है।

जिसमे बिजाई के 10-15 दिन में बीजपती अवस्था पर पौधे सूख या मुरझा जाते है तथा जड़ वाले हिस्से में सफेद रंग की फफूंद दिखाई देती हैं। उस अवस्था में कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत घोल बना कर छिड़काव करें । यदि आवश्यक हो, तो 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव दोहराएं। दूसरा, पत्ती के नीचे वाली सतह पर ऐसी सफ़ेद रंग की फफूंद आ जाती है, जिससे बाद में पत्तियां पीली होकर सूखने लगती हैं, ये सरसों में फुलिया रोग के लक्षण है। अगर ऐसे पौधे ज्यादा हैं तो मैंकोजेब (डाइथेन एम-45) या मेटलैक्सिल 4 प्रतिशत+मैन्कोज़ेब 64 प्रतिशत नामक दवाई का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव कर दें। उन्होंने बताया कि यदि जड़ गलन और पत्तियों पर धब्बे एक साथ दिखाई दें, तो कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत और मैन्कोजेब 0.25 प्रतिशत की दर से टैंक मिश्रण के रूप में डालें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	9-11-25	5	1-3

सरसों में जड़ गलन समस्या की पहचान कर छिड़काव करें किसान : प्रो. बलदेव राज काम्बोज

सरसों की फसल का जायजा लेते अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग एवं अन्य।

हिसार, 8 नवम्बर (विरेन्द्र वर्मा): सरसों हरियाणा की एक महत्वपूर्ण फसल है और किसानों की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है। रबी 2024-25 में इसे 6.68 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया गया और किसानों ने अच्छा उत्पादन लिया था। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि इस वर्ष अत्यधिक वर्षा के कारण, इस फसल की बुवाई उच्च आर्द्रता और कम तैयार भूमि में हुई है। यह स्थिति इस फसल की प्रकृति के विपरीत है, लेकिन किसानों के पास देरी से बुवाई से बचने का कोई विकल्प नहीं था। इन विशिष्ट सूक्ष्म जलवायु परिस्थितियों में जड़ गलन, फुलिया व उखेड़ा जैसी कुछ क्षेत्रीय समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि जो किसान बीज उपचार नहीं कर पाए थे उनके खेतों में सरसों की फसल में जड़ गलन, फुलिया व पहली सिचाई के बाद उखेड़ा जैसी समस्यां उत्पन्न हुई हैं। उन्होंने इन समस्यों से बचने के लिए बताया कि इस वर्ष कम तापमान के कारण पेंटेड बग (चितकबरा कीट) की कोई विशेष समस्या नहीं है। फिर भी, किसान अभी भी अपनी पुरानी पद्धति के अनुसार कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे हैं। इसलिए, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे इस अवस्था में कीटनाशकों का प्रयोग ना करें।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने भी फार्म का जायजा लिया और बताया कि जड़ों का गलना दो से तीन फफूंद के सामान्य समावेश (फ्युजेरियम, राइजोक्टोनिया और स्क्लेरोटियम) के कारण होता है। जिसमे बिजाई के 10-15 दिन में बीजपती अवस्था पर पौधे सूख या मुरझा जाते है तथा जड़ वाले हिस्से में सफेद रंग की फफूंद दिखाई देती हैं। उस अवस्था में कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत घोल बना कर छिड़काव करें। डॉ. गर्ग ने बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज के दिशा-निर्देश में इस वर्ष सरसों का बीज उपचारित करके किसानो को आवंटित किया गया था, जिससे किसान इन समस्याओं से बच पायें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष	9.11.2025		

सरसों में जड़ गलन समस्या की पहचान कर छिड़काव करें किसान : प्रो. बलदेव राज काम्बोज

-पाठकपक्ष न्यूज-

हिसार, 9 नवम्बर : सरसों हरियाणा की एक महत्वपूर्ण फसल है और किसानों की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है। रबी 2024-25 में इसे 6.68 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया गया और किसानों ने अच्छा उत्पादन लिया था। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि इस वर्ष अत्यधिक वर्षा के कारण, इस फसल की बुवाई उच्च आर्द्रता और कम तैयार भूमि में हुई है। यह स्थिति इस फसल की प्रकृति के विपरीत है, लेकिन किसानों के पास देरी से बुवाई से बचने का कोई विकल्प नहीं था। इन विशिष्ट सूक्ष्म जलवायु परिस्थितियों में जड़ गलन, फुलिया व उखेड़ा जैसी कुछ क्षेत्रीय समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं ।

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि जो किसान बीज उपचार नहीं कर पाए थे उनके खेतों में सरसों की फसल में जड़ गलन, फुलिया व पहली सिचाईं के बाद उखेड़ा जैसी समस्यां उत्पन्न हुई हैं। उन्होंने इन समस्यों से बचने के लिए बताया कि इस वर्ष कम तापमान के कारण पेंटेड बग (चितकबरा कीट) की कोई विशेष समस्या नहीं है। फिर भी, किसान अभी भी अपनी पुरानी पद्धति के अनुसार कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे हैं। इसलिए, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे इस अवस्था में कीटनाशकों का प्रयोग ना करें। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने भी फार्म का जायजा लिया और बताया कि जड़ों का गलना दो से तीन फफूंद के सामान्य समावेश (फ्यूजेरियम, राइजोक्टोनिया और स्क्लेरोटियम) के कारण होता है। जिसमे बिजाई के 10-15 दिन में बीजपती अवस्था पर पौधे सूख या मुरझा जाते है तथा जड़ वाले हिस्से में सफ़ेद रंग की फफूंद दिखाई देती हैं। उस अवस्था में कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत घोल बना कर छिड़काव करें। यदि आवश्यक हो, तो 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव दोहराएँ। दूसरा, पत्ती के नीचे वाली सतह पर ऐसी सफ़ेद रंग की फफूंद आ जाती है, जिससे बाद में पत्तियां पीली होकर सूखने लगती हैं, ये सरसों में फुलिया रोग के लक्षण है।

अगर ऐसे पौधे ज्यादा हैं तो मैंकोजेब (डाइथेन एम-45) या मेटलैक्सिल 4 प्रतिशत+मैन्कोज़ेब 64 प्रतिशत नामक दवाई का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव कर दें। उन्होंने बताया कि यदि जड़ गलन और पत्तियों पर धब्बे एक साथ दिखाई दें, तो कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत और मैन्कोजेब 0.25 प्रतिशत की दर से टैंक मिश्रण के रूप में डालें। डॉ. गर्ग ने बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज के दिशा-निर्देश में इस वर्ष सरसों का बीज उपचारित करके किसानो को आवंटित किया गया था, जिससे किसान इन समस्याओं से बच पायें।

तिलहन अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार ने बताया कि सिंचाई के बाद पत्तियों का मुरझाना और पौधों की शक्ति में कमी मुख्यतः लंबे समय तक पानी जमा रहने के कारण होती है। इसलिए, किसानों को इस रोग से बचने के लिए बहुत हल्की सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। जहाँ नमी की स्थिति बहुत अधिक हो, वहाँ किसानों को पहली सिंचाई 10 दिन देरी से करने की सलाह दी जाती है। पादप रोग विशेषज्ञ डॉ. राकेश पूनियां ने बताया कि जिन खेतों में पहली सिंचाई हो चुकी है और पौधों में पत्तियों के मुरझाने और पौध शक्ति में कमी के लक्षण दिखाई दे रहे हैं, वहां कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यूपी झ 1 ग्राम और स्टेप्टोसाइक्लीन 0.3 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के फार्म निदेशक डॉ. सुरेंद्र सिंह धनखड़, डॉ. सुरेंद्र यादव, डॉ. संदीप आर्य व तिलहन अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. नीरज कुमार, डॉ राजबीर उपस्थित रहे।

	चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	8.11.2025		

सरसों में जड़ गलन समस्या की पहचान कर छिड़काव करें किसानः प्रो. काम्बोज

नभ-छोर न्यूज ▶▶ 08 नवंबर

हिसार। सरसों हरियाणा की एक महत्वपूर्ण फसल है और किसानों की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है। रबी 2024-25 में इसे 6.68 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया गया और किसानों ने अच्छा उत्पादन लिया था। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि इस वर्ष अत्यधिक वर्षा के कारण, इस फसल की बुवाई उच्च आर्द्रता और कम तैयार भूमि में हुई है। यह स्थिति इस फसल की प्रकृति के विपरीत है, लेकिन किसानों के पास देरी से बुवाई से बचने का कोई विकल्प नहीं था। इन विशिष्ट सूक्ष्म जलवायु परिस्थितियों में जड़ गलन, फुलिया व उखेड़ा जैसी कुछ क्षेत्रीय समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि जो किसान बीज उपचार नहीं कर पाए थे उनके खेतों में सरसों की फसल में जड़ गलन, फुलिया व पहली सिचाई के बाद उखेड़ा जैसी समस्यां उत्पन्न हुई है। उन्होंने इन समस्यों से बचने के लिए बताया कि इस वर्ष कम तापमान के कारण पेंटेड बग (चितकबरा कीट) की कोई विशेष समस्या नहीं है। फिर भी, किसान अभी भी अपनी पुरानी पद्धति के अनुसार कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे हैं। इसलिए, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे इस अवस्था में कीटनाशकों का प्रयोग ना करें।

15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव दोहराएँ : डॉ. राजबीर

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने भी फार्म का जायजा लिया और बताया कि जड़ों का गलना दो से तीन फफूंद के सामान्य समावेश (फ्यूजेरियम, राइजोक्टोनिया और स्क्लेरोटियम) के कारण होता है। जिसमे बिजाई के 10-15 दिन में बीजपती अवस्था पर पौधे सूख या मुरझा जाते है तथा जड़ वाले हिस्से में सफेद रंग की फफूंद दिखाई देती हैं। उस अवस्था में कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत घोल बना कर छिड़काव करें । यदि आवश्यक हो, तो 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव दोहराएँ। दूसरा, पत्ती के नीचे वाली सतह पर ऐसी सफेद रंग की फफूंद आ जाती है, जिससे बाद में पत्तियां पीली होकर सूखने लगती हैं, ये सरसों में फुलिया रोग के लक्षण हैं। अगर ऐसे पौधे ज्यादा हैं तो मैंकोजेब (डाइथेन एम-45) या मेटलैक्सिल 4 प्रतिशत+मैन्कोजेब 64 प्रतिशत नामक दवाई का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव कर दें। उन्होंने बताया कि यदि जड़ गलन और पत्तियों पर धब्बे एक साथ दिखाई दें, तो कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत और मैन्कोजेब 0.25 प्रतिशत की दर से टैंक मिश्रण के रूप में डालें।

पहली सिंचाई 10 दिन देरी से करें किसान : डॉ. राम अवतार

तिलहन अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार ने बताया कि सिंचाई के बाद पत्तियों का मुरझाना और पौधों की शक्ति में कमी मुख्यतः लंबे समय तक पानी जमा रहने के कारण होती है। इसलिए, किसानों को इस रोग से बचने के लिए बहुत हल्की सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। जहाँ नमी की स्थिति बहुत अधिक हो, वहाँ किसानों को पहली सिंचाई 10 दिन देरी से करने की सलाह दी जाती है। पादप रोग विशेषज्ञ डॉ. राकेश पूनियां ने बताया कि जिन खेतों में पहली सिंचाई हो चुकी है और पौधों में पत्तियों के मुरझाने और पौध शक्ति में कमी के लक्षण दिखाई दे रहे हैं, वहां कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यूपी 1 ग्राम और स्टेप्टोसाइक्लीन 0.3 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के फार्म निदेशक डॉ. सुरेंद्र सिंह धनखड़, डॉ. सुरेंद्र यादव, डॉ. संदीप आर्य व तिलहन अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. नीरज कुमार, डॉ राजबीर उपस्थित रहे।